~~वैदिक संस्कृति~~

मुगल साम्राज्य

Lecture given by -

Mamta Rani

Guest Assistant Professor

Deptt. of History.

SNSRKS College, Saharsa,

Bihar.

अतः यद्यपि मुगल साम्राज्य का विघटन संस्थागत कमजोरियों के कारण हो रहा था परन्तु औरंगजेब ने अनजाने ही इस प्रक्रिया को प्रोत्साहन दे दिया।

औरंगजेब की राजपूत नीति

क्या औरंगजेब ने अकबर की नीति को उलट दिया?

यद्यपि अपनी दृढ़धर्मिता के कारण औरंगजेब राजपूतों के राठौर एवं सिसोदिया वंशों के साथ एक अनावश्यक युद्ध में उलझ गया किन्तु हम ऐसा नहीं कह सकते हैं कि उसने अकबर की नीति को उलट दिया।

प्रथम, उसके अधीन मुगल मनसबदारी में राजपूतों की नियुक्ति जारी रही। द्वितीय, शाहजहाँ के काल में किसी भी राजपूत अमीर को सूबेदार का पद प्राप्त नहीं, जबकि औरंगजेब के काल में उन्हें प्राप्त। तृतीय: मिर्जा राजा जय सिंह एवं जसवंत सिंह उसके काल में सर्वश्रेष्ठ मनसबदार

क्या राजपूतों के साथ उलझाव के कारण मुगलिया साम्राज्य विघटित हो गया?

हालांकि यह सही है कि इस संघर्ष के कारण आवश्यक रूप में राजनीति में कुछ व्यवधान उत्पन्न हुए परन्तु ऐसा मानना उचित नहीं है कि इस नीति के कारण मुगलिया साम्राज्य विघटित हो गया क्योंकि आगे जब सिसोदिया शासक इस संघर्ष से बाहर हो गए तो संघर्ष बहुत सीमित हो गया।

शाहजहाँ व जहाँगीर के अन्तर्गत मनसबदारी व्यवस्था में परिवर्तन :-

जहाँगीर के काल में मनसबदारी व्यवस्था में एक नई पद्धति जोड़ी गई इसे दोअस्पा, सै-अस्पा पद्धति के नाम से जाना गया अर्थात् जात रैंक में फेर-बदल किए बिना संबंधित मनसबदार के अन्तर्गत रखे जाने वाले सवारों की संख्या दो गुनी अथवा तीन गुनी की जा सकती थी।

शाहजहाँ के अन्तर्गत एक नई पद्धति आरंभ हुई इसे महाना वेतन प्रणाली के नाम से जाना गया। यह पद्धति संभवतः जमादामी एवं हासिलदामी में बढ़ते हुए अन्तर के कारण हुआ। महाना वेतन प्रणाली के अन्तर्गत अब मनसबदारों को वार्षिक तनख्वाह न देकर आठ माह, छः माह, पाँच माह इतने तक कि तीन माह का तनख्वाह ही मिलता था एवं उसी के अनुपात में वे अपने घुड़सवारों को मुक्तहस्त कर देते थे।

दोअस्पा प्रणाली :-

5000 / 5000 × 2 = 10000, सवारों की संख्या

सैअस्पा प्रणाली :-

5000 / 5000 × 3 = 15000 सवारों की संख्या

18 वीं सदी का उत्तरार्द्ध

कुछ ब्रिटिश पक्षधर विद्वानों की प्रवृत्ति रही है कि 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध को अंधकार के युग के रूप में प्रदर्शित किया जाए ताकि 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध के काल तथा भारत में ब्रिटिश को मुक्तिदाता के रूप में सिद्ध किया जाएगा। ऐसे विद्वानों ने प्लासी के युद्ध को प्लासी की क्रांति करार देने का प्रयास किया था

किन्तु हम इस तथ्य को स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि 18वीं सदी में ब्रिटिश के द्वारा भारत की प्रशासनिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना में ऐसा कोई भी परिवर्तन नहीं लाया गया जिसे हम क्रांति से जोड़ सकें।